ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-7

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

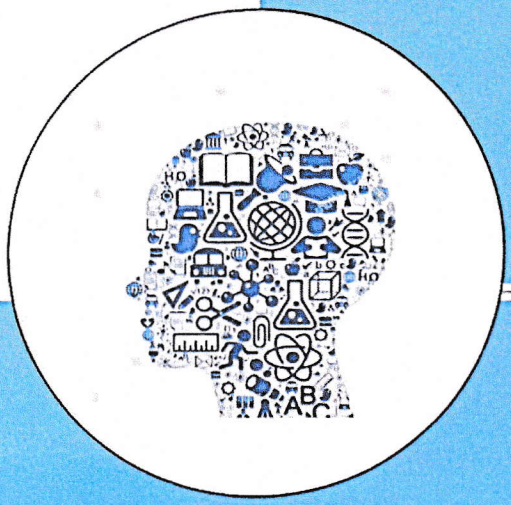

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-7 March- Apr 2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

March-Apr Volume-2 Issue-7

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Prof. Dr. V. V. Killedar
Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur

Co- Editors

डॉ. एस. पी. पवार	लैफ्ट.डॉ. आर.सी. पाटील	डॉ. एस. जे. आवळे
प्रा. एन.पी. साठे	प्रा. ए. बी. घुले	प्रा. डॉ.एम. टी. रणदिवे
डॉ. एन. ए. देसाई		

Published by- Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

24	हिन्दी उपन्यासों में किसान विमर्श : स्वरूप विवेचन ('गोदान','ग्लोबल गाँव के देवता' और 'फाँस' के विशेष संदर्भ में) मिर्जा मासुमे फातिमा	63-65
25	शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी विमर्श मोल्लम डोलमा	66-67
26	'भावना के पीछे' नाटक में चित्रित नारी प्रा. साठे नीता पोपट	68-69
27	'कुइयाँजन' उपन्यास में महानगरीय विमर्श प्रा. डॉ. नेहा अनिल देसाई	70-71
28	दलित चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति (सूरजपाल चौहान का कविता संग्रह 'क्यों विश्वास करूँ' के विशेष संदर्भ में) डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे	72-74
29	'फाँस' उपन्यास में चित्रित कृषक जीवन डॉ.परमेश्वर जिजाराव काकडे	75-77
30	जागतिकीकरण और सबसे कठिन काम कहानी प्रा. डॉ. पवन नागनाथ एमेकर	78-79
31	'अकाल में उत्सव' उपन्यास में किसान जीवन की व्यथा प्राजक्ता शिवाजी कुरळे	80-81
32	दलित अस्मिता और हमारे हिस्से का सूरज डॉ.प्रकाश आठवले	82-85
33	उत्तरशती के हिंदी उपन्यासो में नारी समस्या डॉ. प्रकाश राजाराम मुंज	86-89
34	दलित चेतना का दस्तावेज : छप्पर प्रा. डॉ. आर. बी. भुयेकर	90-92
35	भूमंडलीकरण और हिंदी कविता लैफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील	93-95
36	हिंदी साहित्य में आदिवासी साहित्य की विकास धारा: एक परिपेक्ष्य के रूप में डॉ. आर. पी. भोसले	96-98
37	सुनील अवचार यांच्या कवितेतील ग्लोबल वर्तमान डॉ सुनिता रामचंद्र कांबळे	99-100
38	चंद्रकांता के 'अंतिम साक्ष' उपन्यास में नारी विमर्श रविंद्रनाथ माधव पाटील	101-103
39	कुर्सी पहियोंवाली' में उद्धृत नारी आत्मनिर्भरता कु . प्राजक्ता अंकुश रेणुसे	104-106
40	समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री- विमर्श सौ. रेशमा गणेश लोंढे	107-108
41	आँचलिक उपन्यासों में नारी विमर्श प्रा. रोहिणी गुरुलिंग खंदारे	109-110
42	नारी की व्यथा को उजागर करता नाटक 'जी, जैसी आपकी मर्जी.... प्रा.रूकसाना अल्ताफ पठाण	111-112
43	श्री मैथिलीशरण गुप्तजी की कविता 'सैरंध्री' में नारी-विमर्श सुश्री. रूपाली संभाजी पाटील	113-114
44	'नरककुंड में बास' उपन्यास में दलित विमर्श प्रा. डॉ. संदीप जोतिराम किर्दत	115-117
45	नीरजा माधव के 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर विमर्श डॉ.संजय पिराजी चिंदगे	118-119
46	समकालीन हिंदी साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श डॉ. संजय ना. पाटील	120-123
47	भूमंडलीकरण का दलितों पर अधूरा प्रभाव प्रा.राठोड संजय लिंबाजी	124-126

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue.7 Mar - Apr 2022

'कुइयाँजन' उपन्यास में महानगरीय विमर्श

प्रा. डॉ. नेहा अनिल देसाई
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
drnehaadesai@gmail.com

औद्योगिकरण के साथ गांव के लोगों का नगर की ओर आकर्षण बढ़ता गया ।महानगरों की चकाचौंध, शिक्षा व्यवस्था, रोजगार के अवसर बढ़ने के साथ महानगरों में अपने लिए नए सार्थक अवसरों की खोज के परिणामस्वरूप जसंख्या वृद्धि हुई । आर्थिक विकास की ओर आकर्षित समाज आज के भौतिक युग में आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए महानगर की ओर आकर्षित हो जाता है। भौतिक विकास की संकल्पना को प्राप्त करने के साथ उससे उत्पन्न समस्याओं को देखना आवश्यक है ।

महानगरों की समाज व्यवस्था आर्थिक विकास के साथ तैयार हो गई है। मुक्त जीवनशैली का आकर्षण एवं गाँव के जातिव्यवस्था को और निर्धनता को अंशरुप से कम करने में नगरीय क्षेत्र सफल रहे है। भूमण्डलीकरण के बाद आर्थिक विकास महानगरों में हो सकता है ऐसा अलिखित सिद्धांत हो गया है। कुशल, अर्धकुशल, अकुशल मजदूर और छात्रों के कारण महानगरों की जनसंख्या वृद्धि हो गई है। महानगर का रूप स्पष्ट करते हुए गोपालराय जी का कथन है, "जहाँ तक कस्बों से लेकर महानगरों तक के जीवन का प्रश्न है उसे बिलकुल अलग-अलग खानों में नहीं बाटा जा सकता। जिंदगी की बहुत-सी स्थितियां और उनकी वास्तविकताएं समान होती है।" [1] इससे स्पष्ट होता है कि भूमण्डलीकरण के साथ महानगरों में साधन संपन्नता को अर्जित करने के लिए गाँवो एवं नगरों से युवाओं का स्थलांतर बढ़ता गया है। गाँव से रोजगार के लिए निकली युवा पीढ़ी अपने साथ गाँव की संस्कृति ले जाती है। लेकिन महानगरों में एक नई दिशा में तब्दील होने के कारण समाज व्यवस्था का नया रूप धारण कर सकती है ।

नासिरा शर्मा हिंदी साहित्य में संवेदनशील और प्रगतीशील विचारों की लेखिका के रूप में ख्यात हैं। यह वह लेखिका है जो मानवता को धर्म सांप्रदायिकता से ऊपर मानती हैं। मुस्लिम पारिवारिक स्थितियाँ, रीति-रिवाज और विडंबनाओं की भयानक स्थिति, हिंदुओं की पाखंडी प्रवृत्ति आदि का मार्मिक चित्रण नासिरा शर्मा के साहित्य की विशेषताएँ रही हैं। 'कुइयाँजान' उपन्यास का प्रकाशन सन् 2005 में हुआ है। महानगर के बदलते समाज का यथार्थ चित्रण 'कुइयॉजन' में है।

कुइयाँजन उपन्यास महानगरीय जीवन को अधोरेखित करता हैं । प्रस्तुत उपन्यास का नायक डॉ. कमाल साधन संपन्न परिवार से है लेकिन वह गरीब परिवार की सहायता करता है। उसके बहन की शादी, बारातियों का रहन सहन, घूमने के लिए जाना, खान पान की व्यवस्था आदि में महानगरीय जीवन की अमीरी दिखाई देती है । इसी के साथ धर्म के अनुसार त्यौहारों का धूमधाम से मनाए जाने का वर्णन किया है।

अकाल के कारण महानगर का जीवन

महानगर में गरमी के मौसम में बदतर स्थिति होती है । पानी के अभाव के कारण और बढ़ती गरमी से लोग परेशान हो जाते है। उपन्यास के मास्टरजी अकाल की परिस्थितियों पर काफी गहरा विचार करते है। उनके मतानुसार नगरों में पानी का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है लेकिन पानी के संचय की किसी प्रकार की सुविधाओं का प्रयोजन नहीं किया जाता है। गरमी से उत्पन्न परिस्थितियों पर मास्टर जी के विचार है , " लगता है , अब जाड़ा बरसात केवल दो –दो माह के होंगे और बाकी आठ माह गरमी पड़ेगी । लू के थपेड़े चलेंगे , वनस्पतियों सूखेंगी , नदियों में पानी कम हो जाए। लोग बीमार पड़ेगे । कुछ लू लगनेसे चल बसेंगे । शायद इस तरह जनसंख्या घटने लगेगी । " 2 सीमित जगह में अधिक से अधिक मात्रा में लोगों को रहना पड़ता हैं। छोटी जगह में बाढ़ एवं गर्मी के दिनों में समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं ।

वाढ़ के कारण महानगर का जीवन :

महानगरों की अर्थव्यवस्था विकास की ओर बढ़ने से सभी प्रकार के लोग अपनी आय प्राप्ति के लिए इस ओर प्रस्थान करते है। आर्थिक प्राप्ति के लिए कुशल –अकुशल मजदूर वर्ग भी है। जो प्रस्तुत उपन्यास में नगरीय क्षेत्र की विलासिता के साथ निम्न वर्ग की दयनीयता को भी दर्शाया है। आज के महानगर आर्थिक स्तर से अमीर और गरीब दो भागों में विभाजित हो गए हैं । अमीर वर्ग की सेवाओं के लिए गरीब वर्ग महानगरों में बस चुका है।" ग्रामीण विभागात अपुऱ्या उपजीवीकेच्या संधी आहेत तर शहरी अनौपचारिक क्षेत्रात कमी उत्पादन क्षमता या वैशिष्टामुळे स्थलांतरणात वाढ होत आहे. यामुळे शहरीकरणाच्या समस्यत नवी आव्हाने निर्माण होत आहेत. भारतीय संदर्भात गावाकडून शहराकडे स्थलांतरणाचा दर मध्यम असला तरी गावाकडून शहराकडे लोकसंख्याचा वाढता ओघ हा चिंताजनक आहे. म्हणजेच शहरांची वाढ , अनौपचारिक क्षेत्रातील रोजगार आणि झोपड़पट्टीतील राहणी धरता एकन्दर बकाल आणि निम्न राहणी हे सर्व एकमेकाना व्यापणारे मुद्दे आहेत ." 3 (ग्रामीण क्षेत्र में उपजीविका के साधनों की कमी है तो नगरों में अनौपचारिक क्षेत्र में उत्पादन की विशेषताओं के कारण स्थलान्तरन में वृद्धि हुई है । इस कारण महानगर की समस्या बढ़ जाती है। भारत के संदर्भ में गाँव से नगर की ओर स्थलान्तरन का प्रतिशत मध्यम हुआ तो भी गाँव से नगर की ओर जनसंख्या की वृद्धि चिंता का कारण बन सकती है। याने नगरों का बढ़ना अनौपचारिक क्षेत्र के रोजगार के अवसर और झुग्गी झोपड़ी का अधिवास को ध्यान में रखते है तब इन बस्तियों में निम्न स्तर का रहन –सहन एक दूसरे के साथ है।) स्पष्ट है कि गाँवो से शहरों की ओर आकर्षित होने में उपजीविका का महत्त्व अधोरेखित होता है। महानगर में जीवन यापन करने के लिए आनेवाली जनसंख्या अधिक मात्रा में है | इन सभी के लिए जगह की कमी के और उचित मूल्य नहीं अदा करने के कारण झोपड़ीयों की संख्या बढ़ जाती है। छोटी जगहों में अधिक मात्रा में लोगों का रहना बाढ़ के समय समस्याओं को बढ़ाता है । "जरा गौर करें.....बरसात ने सूखे नाले और छोटे तालाब पानी से जरूर भर दिए हैं। जिनमें संक्रामक रोगों के कीटाणु भी कुछ सप्ताह बाद भारी मात्रा में पनप उठे हैं । मक्खी –मच्छर के छतों से पटा पानी भैसों के नहाने और सुअरों के फिसलकर गिरने से भी पीने के काबिल नहीं रह पाता, मगर मजबूरी के चलते लोग उसमें बरतन, कपडा धोते हैं

और वहीं से शौच इत्यादि के लिए पानी लेते हैं। कहीं –कहीं तो खुद हाथों से उलीचकर, नीचे का पानी साफ़ समझ, घड़ा भरकर घर भी ले जाते हैं।"4 कुइयाँजान उपन्यास में बाढ़ के समय की महानगरीय जीवन की दयनीयता को दर्शाया है।

महानगरों में बाढ़ आने से परिस्थिती बद्तर होती है। निम्न स्तर के लोगों के जीवनमें बीमारी फैलती है - " मच्छरों, कीड़ो और तरह- तरह के कीटाणुओं ने इस ठहरे पानी में रहकर बीमारी फैला दी। रोज किसी न किसी इलाके में होती मौतों की खबर छपने लगी थी। साफ पानी की कमी थी। जगह–जगह से नल टूटने और सड़क धंसने से शहर के कुछ रास्ते बंद पड़े थे।" 5 स्पष्ट है कि यह आबादी बढ़ने से लोगों ने अपने रहने की व्यवस्था छोटी छोटी जगह में की है जहाँ हर एक मौसम में तकलीफ उठानी पड़ती हैं। बरसात के दिनों में पानी भर जाने से बीमारी बढ़ जाती है। उचित मूल्य चुका न पाने के कारण स्वास्थ सबंधी सुविधाओं का लाभ नहीं उठा सकते।ससमाज में पानी समस्याओं के लिए योगदान आवश्यक है। इक्कीसवीं सदी के गहन सवालों में चुनाव करना होगा कि नदी का चलता जल या बहती नदी, फलता जल एवं नदी किनारों की खुशहाली और जलता जल एवं प्रदूषण से व्याप्त नदी आदि में से किस रूप को अपनाना है, उसी प्रकार के प्रयास करना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत उपन्यास का नायक महानगरों की समाज व्यवस्था में कठिन दौर में, घोर निराशा में संबल और सहारा देता हैं। रोजगार के अवसर एवं तरक्की के लिए महानगरों की आबादी बढ़ती गई है।जन-मानस की पहचान उसका दिशा निर्देश करने का प्रयास किया है। भूमंडलीकरण के साथ परिवर्तित परिस्थिति और परिवेश में उभरते नये सवालों को सुलझाने का प्रयास किया है। निम्नवर्ग के संवेदना को अभिव्यक्ति दी है। उपन्यासकार ने नये परिप्रेक्ष्य में और नये संदर्भ में खुली दृष्टि से महानगर की यथार्थ परिस्थितियों को अभिव्यक्त किया है। समकालीन सामाजिक समस्याओं को समस्या के रूप में प्रस्तुत करने के साथ समाज की सहायता की आवश्यकता को अधोरेखित किया है।

संदर्भ सूची :

1. गोपालराय , हिंदी साहित्य का इतिहास पृ. 411
2. योजना विकास समर्पित मासिक 2019 अंक - 5 संपादक : राजिंदर चौधरी , (शहरीकरण आणि अनौपचारिक क्षेत्र -अरुप मित्र) पृ. 17
3. शर्मा नासिरा, कुइयाँजान, सामयिक प्रकाशन, 3320- 21 जटवाड़ा , नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002 प्र. सं. 2008 पृ. 91
4. वही पृ. 218
5. वही पृ. 177